ज़ीरो बनो...

विश्व की सारी चीज़े ज़ीरो के इर्द-गिर्द घूमती हैं। एक सामान्य बात से लेकर विशेष बात तक ज़ीरो ही है। ज़ीरो से भी छोटा अंक गणित में एक दशमलव है जिसे हम बिन्दु भी कहते हैं। ब्रह्माण्ड में जितनी सारी घटनाएं घटित होती हैं उन सबकी शुरुआत बिन्दु या बीज से ही होती है। जब दुनिया में कोई बात भी करते हैं तथा बात का कोई जब सार नहीं निकलता तो कहते हैं, कृपया इस बात पर फुलस्टॉप लगाओ। इतना बड़ा वृक्ष पैदा होता है, लेकिन उस वृक्ष का सारा स्वरूप एक छोटे से ज़ीरो आकार के बीज में समाहित होता है या छिपा होता है। आज कोई फॉमुला इज़ात करना हो तो भी तो दशमलव या बिन्दु का महत्व बढ़ जाता है। एक के यदि दाँयी तरफ बिन्दी लगा दी जाये तो उसका महत्व बढ़ जाता है, दस, सौ, हज़ार बन जाता है। हमें तथा आप सब को पता है कि आत्मा का स्वरूप बिन्दी है, प्वाइंट ऑफ लाईट तथा प्वाइंट ऑफ एनर्जी है। आत्मा ऊर्जा ही तो है। जब कभी स्कूल में छोटे बच्चे को गिनती सीखाई जाती है तो उनको एक दो तीन बनाना मुश्किल होता है, लेकिन अगर ज़ीरो या बिन्दी लिखने के लिये कह दिया जाये तो तुरन्त लिखते हैं। कहीं भी पेंसिल पड़ जाये तो बिन्दी सहज रूप से बन जाती है। तो देखिये ना! बिन्दी कितनी सहज है, लिखना भी सहज, बोलना भी सहज और कहना भी सहज। अब इतनी सहज-सी बात है बिन्दी, लेकिन इस सहज बात को स्वीकार करना इतना मुश्किल क्यों? परमात्मा आ करके हमें सारे ज्ञान का सार बिन्दु बनना ही तो सिखाते हैं। इसका मनोवैज्ञानिक कारण हम आपको बताते हैं कि जब भी हम किसी चित्र को देखते हैं, चाहे वह चित्र राम का हो, कृष्ण का हो या किसी भी अन्य देवी-देवता का हो, उसे देखते ही हमारे मन में दो बातें याद आयेंगी। पहला तो उनका गुण दूसरा अवगुण। ये हम इसलिए कह रहे हैं कि इन देवी-देवताओं के बारे में इतनी दंत-कथाएँ प्रचलित हैं, जिसको लेकर सब के अन्दर भ्रम या भ्रांतियाँ पैदा हो चुकी हैं। जिससे सबके अन्दर दो भाव होते हैं, जैसे उदाहरणार्थ राम के बारे में लोग कहते हैं कि राम थे बड़े अच्छे, लेकिन उन्होंने सीता को घर से बाहर निकाल दिया, इसी तरह कृष्ण थे बड़े अच्छे, लेकिन वह पॉलिटिक्स खेलते थे। ये सारी मान्यताएं शास्त्रों को पढ़कर या फिर प्रचलित सीरियल को देखकर बनायी है, जबकि ऐसी वास्तविकता नहीं है। ऐसे ही जब हम किसी इंसान को देखते हैं तो उसके अन्दर भी गुण-अवगुण देखने लग जाते हैं। इसलिए परमात्मा ने हमें सहज रास्ता बताया कि तुम शरीर को ही भूल जाओ, बिन्दु को देखो, बिन्दु बनो और बिन्दु में ही सार है। अगर आपके सामने बिन्दु या ज़ीरो लिख दिया जाये तो आप उसमें बुराई निकालकर दिखाओ ज़रा। निकाल ही नहीं सकते। कारण यह है कि अगर बिन्दु की परिभाषा दी जाये तो कह सकते हैं कि जिसके अन्दर न तो लम्बाई पाई जाये, न चौड़ाई पाई जाये, न ऊँचाई पाई जाये और न गहराई पाई जाये। इसलिए बिन्दु में से आप अवशिष्ट या कुछ भी बचा हुआ नहीं निकाल सकते, यह अपने आप में सम्पूर्ण है। इसलिए परमात्मा का भी रूप बिन्दु है जो देह और देह की दुनिया से परे है, इसलिये तो शक्तिशाली है। क्योंकि वह विस्तार में नहीं जाता। जहाँ विस्तार है वहाँ ऊर्जा का नाश अवश्य होता है। इसलिए कोई भी आकार या बहुत इधर-उधर की बातों में जब हम जाते हैं तो बुद्धि उलझ जाती है। इससे अनेक प्रकार के प्रश्न पैदा हो जाते हैं। आप देखो ना! ज्ञान मार्ग (?) कितना टेढ़ा-मेढ़ा है। इसलिए जो लोग, लोगों के पीछे पड़ते हैं, लोगों के बारे में सुनना चाहते हैं, तो क्या वो उलझाने वाला नहीं होगा। इसलिये परमात्मा ने हमको बहुत सहज रास्ता बताया कि बिन्दु शब्द, आत्मा शब्द कमाल का शब्द है। इसमें सार है जीवन का, जो इसमें जितना आत्मिक स्वरूप, ज़ीरो स्वरूप में रहता है, लोग उसे उतना सम्मान देते हैं, सत्कार देते हैं। दुनिया में जो लोग ज़्यादा बोलते हैं वो लोग झूठ ही बोलते हैं क्योंकि सच तो एक लाइन में पूरा हो जाता है। इसलिए सच्चाई बिन्दी है, आत्मा भी बिन्दी और परमात्मा भी बिन्दी है क्योंकि सम्पूर्ण है। पूरे ब्रह्माण्ड में जो विस्तार है या यूँ कहें कि हमारी धरती पर जो कुछ भी आपको नज़र आता है, उसके लिये भी दुनिया के लोग कहते हैं कि सब-कुछ खाक में मिल जायेगा मतलब ज़ीरो बन जायेगा। इसलिए ज़ीरो बनो, सबको ज़ीरो बनाओ तथा विस्तार रूपी अहम् को नष्ट करो। ●

ब्रह्मांड में जितनी सारी घटनाएं घटित होती है उन सबकी शुरुआत बिन्दु या बीज से ही होती है। जब दुनिया में कोई बात भी करते हैं तथा बात का कोई जब सार नहीं निकलता तो कहते हैं कृपया इस बात पर फुलस्टॉप लगाओ। इतना बड़ा वृक्ष पैदा होता है लेकिन उस वृक्ष का सारा स्वरूप एक छोटा सा ज़ीरो आकार के बीज में समाहित होता है या छिपा होता है। आज कोई फॉर्मूला इज़ात करना हो तो भी तो दशमलव या बिन्दु का महत्व बढ़ जाता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

उपलब्ध पुस्तकें

देखिए 'अपना ऊऊ' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल'
...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न- मैं कुछ ही समय से ज्ञान मार्ग में आई हूँ। हमारे घर में हमारी देवरानी ऐसी आत्मा है जिससे सभी लोग दु:खी हैं, परन्तु वो कहती है कि तुम सब मुझे बहुत तंग करते हो, अब हम क्या करें कि घर में शान्ति व खुशी का माहौल लौट आए?

उत्तर- आजकल सम्बन्धों में कड़वाहट अति विकराल रूप लेती जा रही है, इसका मुख्य कारण है कि आत्माएं अपने जन्म-जन्म के कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करने आ रही हैं। आज प्रत्येक परिवार इस समस्या से ग्रसित है। कहीं बच्चे ने जन्म लिया माँ से हिसाब चुक्तू करने के लिए तो कहीं कोई जीवात्मा पत्नी बनकर आई है वैर लेने के लिए। कहीं किसी का गहरा नाता तो जुड़ा है परन्तु उनके मन में है भयानक बदले की भावना। ये सब कारण हैं परिवार में प्यार के अभाव व स्वार्थ की अति के। इनसे मुक्त होने के लिए कुछ आध्यात्मिक प्रयास करने ही होंगे। ऐसी आत्मा के लिए आप आत्मिक भाव व शुभभावना अपनायें क्योंकि वे स्वयं ही बहुत दु:खी रहती हैं, उनके अपने ही संस्कार उन्हें सुख-चैन की नींद नहीं सोने देते। उन्हें देखकर हमेशा ये सोचें कि ये अच्छी आत्मा हैं। स्वयं सारा दिन अच्छे स्वमान में रहें, इससे श्रेष्ठ वायब्रेशन्स उस आत्मा को जायेंगे। तीसरी मुख्य बात है, आप अपनी देवरानी से सात दिन तक रोज़ सवेरे सच्चे मन से क्षमा याचना करें। यह काम परिवार के सभी सदस्यों को करना होगा, तब कहीं जाकर उसका मन शान्त होगा और चौथी बात - आप प्रतिदिन उसे पन्द्रह मिनट योग का दान करें।

प्रश्न- मेरे परिवार में परिस्थितियां बहुत आती हैं। इसलिए मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति नहीं बना सकती। इससे मन में सदा ही भारीपन रहता है। कोई सरल विधि बताइये ताकि गृहस्थ में रहते भी मेरी स्थिति श्रेष्ठ बन सके?

उत्तर- परिस्थितियाँ कहीं न कहीं हमारे पूर्व के विकर्मों की ही देन हैं। इनके कारण भी हम ही हैं व निवारण भी हमारे ही पास है, परन्तु ध्यानपूर्वक हमें इन परिस्थितियों के वश नहीं होना है अन्यथा ये हमें निर्बल करती ही रहेंगी। अपनी शक्तियों की स्मृति में रहें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और यह न भूलें कि सर्वशक्तिवान हज़ार भुजाओं सहित मेरे साथ है। इसका अभ्यास दिन में दस बार अवश्य करें। इससे परिस्थितियों में हल्के रहेंगे। याद रखना है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा व सब कुछ कल्याणकारी है। ईश्वरीय महावाक्य याद रखें कि स्वमान से बनती है श्रेष्ठ स्थिति व श्रेष्ठ स्थिति से नष्ट होती है परिस्थिति। इसलिए स्थिति की श्रेष्ठता हेतु सारा दिन स्वमान का अभ्यास चलता रहे। स्वमान के वायब्रेशन्स हमारे मस्तिष्क में अंकित निगेटिव वायब्रेशन्स को समाप्त कर देते हैं। इससे आपके मन का भारीपन समाप्त हो जाएगा। प्रतिदिन एक घण्टा पावरफुल योग इस स्वमान से अवश्य करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न विनाशक हूँ। इस योग की शक्ति से अनेक परिस्थितियाँ समाप्त हो जाएंगी। अनेक लोग इस विघ्न विनाशक योग के द्वारा विघ्नों को समाप्त कर चुके हैं।

प्रश्न - मैं एक व्यापारी हूँ, मुझे बहुत ज़्यादा डिप्रेशन हो गया है। मेरे घर का वातावरण निराशा से भर गया है। मुझे न जीने को मन करता, न मरने का, न खाना अच्छा लगता, न किसी से मिलना। मुझे इससे बाहर निकलने का रास्ता बताइये?

उत्तर - बाबा आपको अवश्य मदद करेंगे। एक अनुभव सुन लें। अभी-अभी मैं हैदराबाद में था। दो व्यापारियों ने मुझे बताया कि इक्कीस दिन के प्रयोग से वह बिल्कुल ठीक हो गये हैं, उन्हें नवजीवन मिल गया है, वे अब बहुत खुश हैं। इक्कीस दिन तक आप भी कुछ अभ्यास कर लें।

सवेरे जब भी आप उठो तो उठकर आपको उन आत्माओं से क्षमा याचना करनी है जिन्हें इस जन्म में या पूर्व जन्मों में आपसे कष्ट मिला है, उनके बुरे वायब्रेशन्स, उनकी बद्दुआएं आपको सुख से जीने नहीं दे रही हैं। क्षमा याचना इस तरह करें। उठकर फ्रेश होकर ये संकल्प करें कि मैं देवकुल की महानात्मा हूँ। फिर संकल्प करें कि पूर्व जन्मों में मेरे द्वारा जिन्हें भी कष्ट पहुँचा हो वे सूक्ष्म रूप में इमर्ज हो जाएं। तत्पश्चात करबद्ध हो उनसे सच्चे मन से क्षमा मांगें व उन्हें दुआएं दें...सब सुखी हो जाओ, शान्त हो जाओ, तुम्हारा कल्याण हो।

यज्ञ में कोई विशेष सहयोग देकर पुण्य जमा करें। बाबा को भोग लगवायें व रात को सोने से पूर्व इक्कीस दिन तक 108 बार लिखें कि मैं एक महान आत्मा हूँ। गोली धीरे-धीरे छोड़ दें, अवश्य ही आपको खुशियों भरा नवजीवन प्राप्त होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com